नमस्कार मित्रो – सबसे पहले तो संसार के तमाम पोषक तत्वों के उत्पादों के मुकाबले सूक्ष्म पोषक तत्वों से भरपूर इस महान खुराक को 50ml दूध के साथ प्रत्येक व्यक्ति द्वारा नित्य प्रति सेवन के महत्व को बताना परमावश्यक है।

प्राकृतिक रसायनो (Natural Chemical) से बने हमारे इस शरीर को 24 घंटे में 2500 ऊष्मा उर्जा इकाईयों (2500 से 3000 Calories) की आवश्यकता होती है। यह ऊष्मा उर्ज़ा इकाई वह इकाई है जो इस धरती पर उत्पन्न होने वाले समस्त खाद्य पदार्थों में उनके निश्चित भार में रहने वाली उर्ज़ा का माप (measurement) है। प्रत्येक खाद्य पदार्थ में यह माप उसके एक निश्चित भार में अलग–अलग होता है।

वैसे तो पोषक तत्वों, खाद्य–पदार्थो तथा दिव्य जड़ी–बूटियो के गुण और भी होते है, पर हम केवल शरीर की सुरक्षा प्रणाली (रोग प्रतिरोधक क्षमता) Immune System को ऊर्ज़ावान रखने तक के मन्त्र की बात करते हैं। जिसके और भी अप्रत्यक्ष तथा विलक्षण फायदे होते हैं।

उपरोक्त कथनानुसार 24 घंटे में हम अपने शरीर को आवश्यक 2000 से 2500 Calories नहीं दे पाते। क्योंकि संसार के सभी प्राणी केवल अपनी पेट की भूख को ही शान्त करना आवश्यक समझते है अथवा Extra Energy प्राप्त करने के लिये ताकतवर मानी जाने वाली चीज़े ही खाते रहते है परन्तु यह कभी पता नहीं करते कि 2500 Calories 24 घंटे में उन्होंने लीं भी हैं क्या।

यह सर्वदा कहा–सुना जाता हैं कि एक इंसान पिछले 200 से 300 वर्षों से 1000 से 1500 Calories तक ही अपने 24 घंटे में खाये गये खाद्य पदार्थो से ले पाता है।

दूसरी तरफ इंसान के कार्यो के अनुसार Calories Burn भी होती रहती है। कहने का मतलब यह है कि जैसे ही हमारे शरीर में कोई नाड़ी–तन्त्र से सम्बन्धित कमी Deficiency आ जाती है उससे रोगादि घेरना शुरू कर देते है।

अति सर्वत्र वर्जिये की शात्रोक्ती को याद करते हुये (यह नव तत्व का तोल, छटांक दुग्ध मुख में धोल, नित्यप्रति सेवन जो करे,स्वास्थ्य पाये अनमोल), यह भी याद रखना पड़ेगा कि जो भी stuff इस्तेमाल करें नियंत्रित रूप में इस्तेमाल करें चाहे **Veg,** हो या **Non Veg.** अथवा नशीले पदार्थ। किस पदार्थे में कितनी Calories होती है इसकी तालिका (Table) अपने पास रखें। इस महान दौड़ – भाग वाली जिन्दगी में इतना ख्याल रखना ज़रा टेढ़ी खीर है, समझने की बात केवल इतनी है कि भूख को शान्त करना एक बात और शारीरिक रिक्तता–कमी को पूरा रख कर रोगों से दूर रहना दूसरी बात है।

बस यही बीच की खाई को पाटकर जीवन नय्या को पार करने के लिए, सुनहरे पुल का निर्माण, प्रतिदिन रू 7/– से 10/– कीमत की इस खुराक का सेवन कर Saatvik Enterprises की SLN Smooth Life Nutrients के नाम के हमारे इस दिव्य मिश्रण की खुराक का सेवन कर, निश्चित रूप से किया जा सकता है। इसमें कोई संदेह नही, बस शर्त यह है कि आप चुप चाप इसे अपना जीवन मित्र समझ कर वर्षो तक लगा तार सेवन करते

रहें। बीच में कुछ गैप दे सकते है, अथार्त एक वर्ष में 60 खुराक वाले यह 4 Packs (एक पैक (तीन) 3 महीने के लिए) का भी यदि आप सेवन कर लेते है तो आपको अत्यन्त लाभ मिलता है। इसका लगातार सेवन रोगी रहने से पहले भी तथा निम्नलिखित 35 कारणों से आये रोगों के निम्न किसी भी पद्धति से उपचार के दौरान भी। क्योंकि यह खुराक केवल Purest Natural Nutrients से भरपूर हैं इसका कोई Side effect नहीं होता, इसमें Synthetic कृत्रिम रूप से बनाये Chemical बिल्कुल भी प्रयोग नहीं हुये हैं। यह किसी Synthetic Chemical के Process मे से भी नहीं गुज़री हुई हैं यह Manually Prepared है।

इसके नित्यप्रति खाते रहने से रोगों से ग्रसित व्यक्ति को एक फायदा यह भी होता है कि रोग की पुनरावृति बारम्बारता (Frequency), रोग शान्त होने का समय (Duration), रोग की मात्रा (Severity) इन तीनों Factors की भविष्य में कभी होती चली जाती है। उदाहरणार्थ यदि किसी को एक वर्ष में 4 बार जुकाम, सरदर्द, बदनदर्द, पेटदर्द, आदि होता है तो इस खुराक को लगातार 1 वर्ष तक खाने से अथवा बीमारी के पिछले कई वर्षो के इतिहास के अनुपात में 2 – 3 वर्ष तक खाने से उपरोक्त तीनों Factors की Reduction घटौत्तरी शुरू हो जाती है अथवा डाक्टरी इलाज के दौरान डाक्टर स्वयं भी हैरान रह सकता है। और एक समय ऐसा आता है कि यानी एक Saturation Point ऐसा आता है कि डाक्टर के पास जाना ही बन्द हो जाता है। और डाक्टर के द्वारा बताये हुये परहेजों से भी छुटकारा मिल जाता है क्योंकि (digestion Power) पाचन शक्ति पुष्ट हो जाती है और भूख ठीक से लगनी शुरू हो जाती है।

एक महत्व तथा फायदे की बात और बताना परमावश्यक है जैसे कोई व्यक्ति अपने शारीरिक अवयव Body Organ की भंग अवस्था का कोई Test आदि करा कर इलाज करवा रहा है अथवा कोई Operation Due है तो उसे पूरा करने के बाद डाक्टर बहुत सारी दवाईयाँ लिख देता है तो उसकी Prescription के अनुसार कार्य करना आरम्भ तो कर दें परन्तु साथ साथ हमारी इस खुराक का सेवन अवश्य ही आरम्भ कर दे अन्यथा आपको पता ही है कि आगे का जीवन सफर कितना भयानक हो जाता है, आर्थिक रूप से कमजोर व्यक्तियों के लिये तो बहुत ही असम्मानजनक तथा विकट हो जाता है। इस मिश्रण के आरम्भ करने से दवाईयों से शीघ्र ही छुटकारा मिल जाता है।

भूख को शान्त करने हेतु प्रयोग किये जा रहे Food Stuffs से सम्बन्धित विचार को आगे ठीक आकार देने के लिये हम कुछ उदाहरण प्रस्तुत करते हैं –

एक Burger में 500 Calories होती है और इससे भूख शान्त हो जाती है। इसी तरह से हम भूख शान्त करने हेतु कुछ संतुलित भोजन भी करते रहते हैं। परन्तु संतुलित भोजन में जो Stuff आदि पिछले 1000 वर्षो से मिल रहे हैं उनके अन्दर अब इतनी शक्ति/पौष्टिकता नहीं रही कि केवल संतुलित भोजन ही से आपको 3000 Calories प्राप्त हो जायें, और जितनी भी Calories आपके शरीर में गई है उनमें से कितने पोषक तत्व शरीर में बने हैं तथा बने हुये पोषक तत्वों का हमारे Complete Metabolic System के तमाम Organs ने उचित मात्रा में

स्वीकार भी किया है या नही क्योंकि आज का मानव 2500 Calories को प्रतिदिन प्राप्त करने के लिये stuff ले ही कितना सकता है। जितना stuff लेने के लिये आपका पेट आज्ञा देगा उतना ही तो लेंगे, अतः कहने का तात्पर्य यह है कि इस प्रकार प्रतिदिन लिये जाने वाले खाद्य पदार्थ (Stuff) की Calories के अनुपात में खाये गये पदार्थ में कितने पोषक तत्व हमारे नाड़ी तंत्र द्वारा उत्सृजित किये गये तथा हमारे शरीर के प्रत्येक अंग–प्रत्यंग में कितनी मात्रा में स्वीकार किये गये तथा कितनी मात्रा में बेकार गये। अतः इस तरह प्रतिदिन की Defficiency की Accumulation (बढ़ोतरी) के कारण ही तो रोगों का आगमन होता है। अतः यदि इस आ रही प्रतिदिन की Deficiency को एक महज 6 ग्राम की रू 10/– की खुराक यदि पाटने की क्षमता रखती है तो मेरा ख्याल है कि हर इंसान इस 300/– रू प्रतिमाह के सौदे को नकार नही सकेगा।

हमारे इस मिश्रण की सफलता तीन बातों पर निर्भर करती है–

1) (Its Crude form) इसका सूखा तथा कच्चा होना

2) (Regularity of Intaking) इसका नित्यप्रति लेना

3) (Purity of ingredients) इसमें इस्तेमाल प्राकृतिक सामग्री का शुद्ध होना।

अतः यदि आप पूरे एक वर्ष में इस 360 ग्राम के पैक जिसमें 6 ग्राम की 60 खुराक का मिश्रण है के 4 Packs भी Consume कर लें तो प्रतिमाह के खर्चे की औसत भी और घटकर रू. 300/–भी हो सकती है और भविष्य में आपका Medical का खर्चा radically reduce होने में कोई संदेह नहीं होता।

सारे संसार में जहाँ चले जाओ जिससे मिल लो सबको बहुत कुछ पता होता है फिर भी रोगों से त्रस्त रहते देखे जाते हैं, सरदर्द, बदन–दर्द, पेटदर्द, कमरदर्द, घुटनों का दर्द, खून की कमी, पेट की गर्मी, गुदारोग, चर्मरोग, जोड़ों का दर्द पाँचों इन्द्रियों की बीमारी, हृदय रोग, खाँसी–जुकाम, सांस की बीमारी, रक्त–चाप, मधुमेह, बाहरी चोट, (Biological Hurting) के उपचार के दौरान बढ़ने वाली बीमारी, पानी की कमी, सूखा, मोटापा, थकान, कमजोरी आदि तमाम बीमारियों के निदान हेतु डाक्टर द्वारा परिश्रम करने के बावजूद बीमारियों पर विजय प्राप्त न कर पाने के कारण कैंसर तक की स्थिति आ जाने से बिमारी की विकरालता बढ़ जाती है। इस तरह सभी बीमारियों के लिये हमारे भारत में तो एक ही कारण बताया जाता है कि पेट की बीमारी ही सब बीमारियों की जड़ है और तजुर्बा ही सब इल्मों की जड़ है। और यदि हम भी यह कहते है कि हमारी 7/– से 10/– रू की यह चमत्कारिक खुराक सभी बीमारियों से बचाव कर विजय प्राप्त करने में सक्ष्म है तो अतिश्योक्ति नहीं होगी।

अकाल मृत्यु हरणम् सर्वव्याधि विनाषनम की शास्त्रोक्ति आखिर कहीं तो चरितार्थ होती होगी जी।

नोट – निम्नलिखित 35 परिस्थितियों को सारा जीवन ध्यान में रख पाना काफी मुश्किल रहता है। घर के बड़े अपने छोटो को कहते रहते है कि अपने शरीर का ध्यान रखों, उनके अपने छोटे बच्चे जब बाहर विदेशों में जाते है या घर से दूर पढ़ने काम करने आदि जाते है तो

उनको कहते हैं अपना ध्यान रखना परन्तु ध्यान रखें कैसे यह नही बता पाते या आधी अधूरी जानकारी वाली चीज़े ही बताते रहते हैं जिसका कोई खास फायदा नही होता क्योंकि बिखरे हुए रूप में चीज़े लेने का कोई फायदा नही है अतः आप हमारी इस दिव्य खुराक को आरम्भ करें और निम्नलिखित 35 परिस्थितियों के बारे में निश्चिन्त होकर बिना किसी शक के बढ़िया जीवन यापन करें।

शारीरिक दुखों की श्रेणियाँ तथा Factors

1) शरीर दुख दो तरह के होते है। – Clinical, Biological

2 शरीर जीवाणु दो तरह के होते है। – कामदायक, नुकसानदायक

3) शरीराधार हमारा शरीर – Natural Chemical से बना है।

4) रसायन/chemical दो तरह के होते है। – Natural, synthetic, (Acids)

5) त्रिदोष तीन होते है – वात, पित्त, कफ का Balance

6) शरीर को काम काजी रखना –Nutrients लेना, योग करना, ध्यान – मग्नता, पूजा पाठ, जप–तप आदि। यदि हमारा प्रोडक्ट रैगुलर ले रहे है तो अधिक योग करने अथवा जिम में ज्यादा जाने की कोई आवश्यक नही, इन तीनो कृत्यों (कार्यों) में ही वास्तविक सफलता का रहस्य छिपा है, जो रोगी केवल योगा करते हैं और उपरोक्त दोनों चीज़ों पर ध्यान नही देंगे, तो उनका रोग क्षणिक रूप से शान्त तो होगा परन्तु जैसे ही योग करते करते अन्तराल (Gap) दे दिया तो रोग दुबारा अपनी हरकत शुरू कर देता है। यदि केवल जप–तप, पूजा–पाठ, ध्यान लगाना आदि करते हैं और उपरोक्त दोनों चीज़े नही करते तो शारीरिक समस्याओं के घिराब के कारण मन ध्यान–मग्नता से हटने लगता है और जीवन के महत्वपूर्ण कार्य भी ठीक से नहीं हो पाते अतः तीनों कार्य आवश्यक हैं। अतः योगा वही करे जिनका कार्य हल्की शारीरिक मेहनत वाला है और जो सारा दिन दौड़ भाग में लगे रहते हैं तो उनको उपरोक्त दोनों काम अर्थात हमारे मिश्रण का सेवन तथा पूजा पाठ आदि अवश्य करने चाहियें।

7) शारीरिक दुखों के आने के कारण – ज्ञानल्पता, अन्यों की मानसिकता, देश, काल

8) औषधियो की प्रधान पद्धतियॉ – Alopathey, Homeopathy, Unani, आयुवैदिक (Ayurvedic)

9) ऋतुयें – बसन्त, (Spring), ग्रीष्म (Summer), वर्षा (Rainy) शरद (Winter), हेमन्त, ( ) शिशिर Automn

10) देशिय जलवायू – Cold, Hot

11) Immune System – Naturally Given, this is supposed to be well maintained always for good health and be sound to counter diseases or human mistakes & mis-apprehensions

12) Preventive Measures, Genetic Reasons, Breeds
13) Breast feeding by mothers to their infants
14) Way of Life
15) Routine
16) Nature of work done by them
17) Quantity of Nutrients taken
18) Climatic condition
19) Frequency of self committed mistakes
20) Quantity of Nutrients being taken commensurate to the Volume and kind of mistakes being committed.
21) Lack of Health consciousness which is very important
22) Measures before pregnancy and precautions after pregnancy,
23) Use of drugs
24) Resistance power of immunity
25) Quality of thoughts
26) Habits
27) Calories required by human
28) Capability of taking Calories through other sources than our product.
29) Difference of Calories to be met.
30) Nine Amino Acids in Mother's Milk
31) Type of Life lead

32) किसी कारण वश शुरू में डाक्टर के पास जाकर लोग दवाई तो शुरू कर देते हैं परन्तु काम का बोझ होने के कारण थोड़ा सा ठीक महसूस करने पर दवाई बन्द कर देते है, साल 6 महीने बाद फिर डाक्टर के पास जाने की जब आवश्यकता महसूस करते है तो डाक्टर फिर दवाई शुरू कर देता है फिर किसी और कारणों से परेशानी आ जाती है इसी तरह से जीवन में काम करके सफलता की सीड़ी चढ़ने के लिये, जीवन के सारे आनन्द लेते रहने के चक्कर में पड़े रहते हैं। वे यह भूल जाते हैं कि जो रोग उनके शरीर में स्थान बना रहे होते है उनका उन्हें पता ही नहीं चलता डाक्टर भी खूब मेहनत करता रहता है।

हमारे इस सूक्ष्म पोषक तत्वों से भरपूर मिश्रण का लेना सबसे अधिक महत्व का हैं। यदि केवल योग करते है और आपके शरीर में कोई अनजानी कमी Unidentified Complexity चल रही है तो परेशानी का सामना करना पढ़ सकता है जैसे बिना इँजन आय़ल से आप गाड़ी इत्यादी चलाते जायेंगे तो नित्य प्रति परेशानी आती जाती है चाहे मिस्त्री से कितना ही ठीक करवाते रहो जैसे ही इँजन आयल डालते है तो गाड़ी ना तो गर्म होती है न थकती है ठीक इसी तरह से जब तक हम अपने शरीर की कमी को कुछ हद तक ठीक न कर ले तब तक योग भी नहीं करना चाहियें। एक न्यूट्रिशनल स्टेटस अवश्य ही बनाना चाहिए जिसके बनाने में हमारा यह मिश्रण काफी हद तक सहायक हो सकता है। हाँ यह बात जरूर है कि जब हम इस तरह की सूक्ष्म पोषक तत्वों की बात को समझ कर अपनी कमी को पूरा करतें है और योग आरम्भ करते हैं तो हमें योग का फायदा तुलनात्मक रूप से कई गुणा ज़्यादा होने लगता है तभी योग करने का औचित्य भी ठीक से सिद्ध होता है तो आपका शरीर काफी हल्का हो कर ईश्वर की पूजा करने में भी प्रवृत्त होना शुरू हो ही जाता है जिसमें आश्चर्यजनक नतीजे प्राप्त होने शुरू हो जाते हैं। अतः सारी बात शुद्ध तथा पूर्ण सूक्षम पोषक तत्वों को जीवन में लेते रहने पर ही टिक जाती है अतः सबसे पहले इन्हें अवश्य लेना आरम्भ कर देना चाहिए, जिन्हें हमने आपके लिये प्रस्तुत किया हुआ है।

अतः आज Medical Field अपनी चरम सीमा पर पहुॅच चुकी है। परन्तु आज इस अन्य प्रकार के विशाणु ने जिस तरह से पूरे संसार के होश उड़ा रखे हैं और सभी महान वैज्ञानिक, Doctors, Surgeons (शल्य चिकित्क) आदि नत्मस्तक होकर इसकी रोकथाम नही कर पा रहे, क्या आश्चर्य हैं।

1) जहॉ तक उपरोक्त Clinical/नाड़ी तंत्र से सम्बन्धित बीमारियो का सम्बन्ध है यह बीमारियॉ शुरू में न पकड़ी जाने के कारण विकराल तथा कलिष्ट रूप भी धारण कर लेती हैं, और जहॉ तक Biological/बाहरी चोट अथवा प्रहार से सम्बन्धित शारीरिक कष्टों का सवाल है वह कष्ट चोट की गहराई, फैलाव अथवा चोट कैसे कहॉ तथा किस वस्तु से लगी आदि परिस्थितियों से सम्बन्धित रहता है तथा ऐसे कष्टों का विकराल रूप धारण करना, उपचार आरम्भ करने से पहले लगे समय तथा उपचार में लगे समय, पर आधारित होता है। Clinical/नाड़ीतन्त्र से सम्बन्धित बीमारियॉ भी आगे स्वयं का अपूर्ण ज्ञान, समझ, अन्यों की मानिसकता, देश–कालानुसार, रहन–सहन के तरीके तथा रहने के स्थानों की स्थिति पर निर्भर हैं, ऐसी परिस्थितियों में भी हमारा यह मिश्रण नित्यप्रति लेने से बहुत फायदा होता है।

अपने अनुभव तथा जानकारी के आधार पर एलोपैथिक पद्धती में प्रयोग होने वाले विभिन्न यंत्र तथा दवाईयॉ पूरे संसार में Biological hurting को तो ठीक करने की 100 प्रतिशत कामयाबी क्षणिक रूप से दवाईयो के अच्छे पन की प्रतिशत पर आधारित रहती है। परन्तु नाड़ी तंत्र से सम्बन्धित बीमारियों को पूर्ण रूपेण ठीक करने में एलोपैथिक पद्धति की दवाईयों के इस्तेमाल से मानव को सफलता नहीं मिली और न ही मिल सकती है चाहे कुछ भी कर लो क्योंकि हमारा शरीर Natural Chemical से निर्मित हैं Synthetic Chemicals से नहीं। इस शरीर के

नाड़ी–तंत्र के बिगड़ने की दशा में यदि कोई उपचार की कोई पद्धति इस्तेमाल भी की जाती हैं तो प्रथमतः उसमें जब तक Natural Chemical की मात्रा का उचित समावेश नहीं किया जायेगा तब तक वह दवा कारगर नहीं हो सकती क्योंकि हमारे शरीर को ठीक रखने में Natural Chemicals की ही आवश्यकता रहती है न की Synthetic Chemicals की। परन्तु एलोपैथिक पद्धति में Synthetic Chemicals इस्तेमाल करते हैं जिसका हमारे शरीर पर उल्टा असर भी पड़ जाता है। एसी परिस्थिति में Mix & Match के सिद्धान्त का पालन करते हुऐ हमारे मिश्रण का लेना काफी कारगर साबित होगा।

हमारे शरीर में दो तरह के Becterias पाये जाते है :– एक नुकसानदायक दूसरे कामदायक। यदि कामदायक Becterias की मात्रा हमारे नाड़ी तंत्र में हमारी गलतियों की वजह से कम हो जाये तो नुकसानदायक Becterias की अधिकता हो जाती हैं अतः हम बीमार पड़ने शुरू हो जाते हैं।

जैसे सरदर्द, कमजोरी, थकान, शरीरदर्द, नजला–जुकाम, खॉसी, अकड़न, सुकड़न, आदि हैं, धीरे धीरे विकराल रूप धारण करते जाते है।

5) हमारे शरीर में त्रिदोष नाम के तीन दोष है 1) वात, 2) पित्त और 3) कफ। इन तीनों का बैलेन्स तथा निस्तारण शरीर के 9 छिद्रो से होता रहता है इनका Balance ही रखना होता है उदाहरणार्थ जितनी कफ स्वस्थ्य शरीर में बननी चाहिये वह बने तथा उसका 80 प्रतिशत निस्तारण हमारे विष्टा स्थान से ही निकलना चाहिए।

होता क्या है कि हमारी गलतियों – नासमझियों के कारण suitable measures or उचित तथा आवश्यक पोषक तत्वों के शरीर में न जाने के कारण जो भी Imbalance कफ बनती है वह नाम – गले से निकलना आरम्भ कर देती है जिसे नज़ला–जुकाम कहते हैं, सारा संसार even डाक्टर भी इस प्रारम्भिक स्थिति को जानते हुये भी साधारण Medicine देना शुरू कर देते हैं। लाखों करोड़ों लोग भी बाजार में उपलब्ध हजारों किस्म की खुशबुदार, सुन्दर, सस्ती मंहगी Tablets, Syrups, आदि बड़े चाब से खा खा कर राहत प्राप्त तो करते रहते हैं परन्तु वे बेचारे नही जान पाते कि यह सब क्षणिक राहत देने वाली ही हैं। एक बात और कईओं के शरीरों की अन्दरूनी विकृत स्थिति जो डाक्टर अमूमन भांप नही पाते उनको भी साधारण प्रक्रियॉ में रखे रहते हैं। अब एक स्थिति ऐसी आती है जब अन्दर की दबी हुई Unidentified बीमारी जब अपना रूप दिखाना आरम्भ करती है तब डाक्टर अपने मरीज़ों को दुनियॉ के करोड़ों डाक्टर की सहायतार्थ, महान वैज्ञानिको द्वारा विकसित किये गये बड़े बड़े कलिष्ट तथा मैहंगे यन्त्रों से बारी बारी से टेस्ट करवाने भेज देते हैं ताकी डाक्टर को बीमारी diagnose करने में आसानी हो जाये। अब ये कौन जाने कि जिस यन्त्र पर मरीज़ का टेस्ट किया गया था वह यन्त्र ही कितना ठीक था अथवा नहीं, और तो और जिसने टेस्ट किया था उस महान Attendent ने Testing के Precautionary Measures ठीक से Apply किये थे या नहीं। यह सब भेद के काम छुपे के छुपे ही रह जाते है।

अब आते है यंत्रो द्वारा प्रदत्त Reports पर जो की Computer पर ही निकलती हैं। यदि खुदा ना खास्ता गलती से उस आदमी की सही Report की बजाये किसी दूसरे की Report उसे दे दी जाये तो उसमें आश्चर्य नहीं। ऐसी स्थिति में आप स्वयं विचार करके कह सकते हैं कि उस बन्दे की क्या हालत होगी भविष्य में, ठीक इंसान दवाईयॉ खा खा कर बीमार होता जायेगा और बीमार, और बीमार।

आज का सारा संसार इस नाड़ी तंत्र के बिगड़ने के कारण ही आरम्भ की आयु से ही धीरे धीरे बीमार पड़ते रहना शुरू होता है और जब तक कुदरत द्वारा दी गई दिव्य शक्ति उसका साथ देती रहती है वह बीमारियों को झेलता झेलता, डाक्टरो के चक्कर काटता–काटता, धन की बरबादी करता करता अपने महान सपनो को साकार करता करता अल्पायु में ही मन्द होकर बैठ जाता है अथवा भगवान को प्यारा हो जाता है। पर कभी पूर्ण रूपेण ठीक नही हो पाता।

कुछ अन्य स्थितियाँ

1) माता ने अपने शिशु की Breast Feeding कितना समय करवाई
2) शिशू के Breast Feeding से पहले कितने पोषक तत्व उसे दिये गये
3) बड़े हो कर शरीर से over-working कितनी की
4) वह कहॉ कहॉ रहा
5) उसकी बीमारियों का Volume, Frequency & Severity कितनी रही।
6) समस्त संसार में उपल्बध पोषक कहें जाने वाले तत्वों को कितना Continue करता रहा।
7) पोषक कह कर बिकने वाले मसालों में पौष्टिकता थी ही कितनी।

आजकल बड़े बड़े साधू भी यौगिक क्रियाओं के आसनो का खूब बखान करते रहते हैं और बेचारे प्रबुद्ध शरीफ लोग यौगिक क्रियाओं को शौक से या मजबूरी में पैसा बचाने के लालच मे थोड़ा सीख कर करना आरम्भ कर देते है। परन्तु जिन लोगों को कुछ छुपी हुई बीमारियॉ पहले से ही हुई होती है वो बेचारे महान कहे जाने वाले महान योगाचार्य के प्रभाव में आकर योग करना शुरू कर देते हैं और उन्हें अपने प्राणों तक को बचाने के लाले पड़ जाते हैं और कई तो भगवान को भी प्यारे होते सुने गये है।

मैं ऐसे सिखाने वाले महानुभावों से प्रार्थना करता हूॅ कि जिन लोगों को उन्होंने सिखाना हैं उन्हें पहले एक वर्ष तक हमारे प्रॉडेक्ट द्वारा पोषक – तत्वों को खाने के लिये कहें और धीरे धीरे चरण – बद्ध तरीके से योग सीखा कर Meditation के लिये भी प्रेरित करें। साथ साथ अपने अपने इष्ट देव का ध्यान भी थोड़ा थोड़ा करवाते रहें। अतः मेरे कहने का अर्थ यह है कि तीनो बातों में से हमें किसी एक बात पर ही नहीं टिकना है। हमारा SLN Smooth Life Nutrient तो Regular नित्यप्रति लेना ही है और Exercise, Light Exercise, योग/कामकाज भी करें। शारीरिक मेहनत कम होती हो तो योगादि करें, नहीं तो योगादि की आवश्यकता कम ही रहती हैं। हॉ यदि बहुत ही लम्बी आयू भोगने का तजुर्बा करने की इच्छा जागृत हो जाये तो Nutrients के साथ साथ योग के आसनो को करे, शरीर के अन्दर की

तह तक पहुॅची छोटी मोटी बीमारी भी आन्दोलित होकर स्वतः ही विष्टा में मिल कर विसर्जित हो जायेगी। और आप रोग रहित हो जायगें।

यहाँ कहने का अभिप्राय यह है कि शरीर में नित्यप्रति gradually बढ़ते रहने वाली Deficiency कमी हमारे कुदरत द्वारा प्रदत्त मूल्यवान दिव्य नाड़ी तंत्र को Proportionately कमजोर कर देती है।

जैसे विद्या प्राप्त करने, कोई Training प्राप्त करने आदि में नित्यप्रति मेहनत की जाये, ध्यान – मन लगाकर किसी भी काम को किया जाये तो अवश्य ही इच्छित, अथवा सही परिणाम प्राप्त होते हैं। यदि सारा साल अथवा निर्दिष्ट Period में ध्यान – मन लगाकर कुछ न किया हो और अन्त में अच्छा परिणाम प्राप्त करने के लिये Comparatively बहुत ज़्यादा मेहनत करनी होती है जिससे दिमाग पर बहुत ज्यादा बोझ भी पड़ जाता है अतः अमूमन Normal Result से कुछ ही ज्यादा प्रतिशत ही आ पाते है। अतः इच्छित क्षेत्रों सें adminision के लिये खूब मारा–मारी करनी पड़ती है, कई बार तो मन के विरूद्ध ही मिल रहे कार्य क्षेत्र को स्वीकार करना ही पड़ता है।

तो ठीक इसी प्रकार हम उपरोक्त वस्तु स्थिति को अपने शारीरिक स्वास्थ्य से अवश्य ही सम्बन्धित करें तो वह ज्यादा कारगर साबित हो सकता है क्योंकि सारा जीवन काम तो इसी शरीर से लेना होता है। और यदि शरीर ही समय समय पर धोखा देता रहे तो काफी Complications का सामना करना पड़ जाता है।

एक विशेष ध्यान देने वाली बात यह भी है कि स्वास्थ्य को ठीक रखने सम्बंधी कहे अनुसार निर्दिष्ट कोई 40 निर्देश बताये गये हैं। परन्तु पिछले 1000 वर्षों में समाज के स्वास्थ्य सम्बन्धि तौर तरीकों पर नज़र डाले तो पता चलता है कि आज के इस भौतिकवाद से जकड़े समाज में रहने वाला इंसान उन निर्दिष्ट 40 निर्देशों का पालन कदापी नही कर सकता। चाह कर भी नहीं कर सकता। ज्यादा से ज्यादा 10 – 15 ही कर पाता है। कुछ हिम्मती महानुभाव 25 प्रतिशत तक का पालन कर लेते होंगे वो भी 50 वर्ष की आयू के बाद ही कर पाते हैं। तब तक बहुत देर हो चुकि होती है और कुदरत द्वारा प्रदान की हुई आंतरिक ताकत काफी ज़्यादा क्षीण हो चुकी होती है तब शरीर के अन्दर घर की हुई बीमारियाँ अपने दर्शन देना आरम्भ कर चुकि होती हैं।

कहने का अभिप्राय यह है, जीवन का युद्ध जीतने के लिये या तो "दुश्मन" – अर्थात आने वाली बीमारियो का भेद पता लगाना अथवा भेद पता न लग रहा हो तो बड़े बड़े दिव्यास्त्र प्राप्त कर दुश्मन के छक्के छुड़ाने की स्थिति का पता चले और तभी दिव्यास्त्र प्राप्त किये जा सकें तो हार कभी नही होती, सारे संसार में Market में उपलबध सैंकड़ो Tonics रूपी दिव्यास्त्र वर्षों से बिक तो रहे हैं पर बड़ी हैरत तथा अचम्भे की बात है कि पहले कुछ ही बीमारियॉ होती थी परन्तु आज सैंकड़ों बीमारियाँ पैदा हो चुकी है उन Tonics की उपलब्धता के बावजूद, कमाल है। कितने लोग खतरनाक बीमारियों का इलाज लाखों रूपये खर्च कर के कितने वर्ष तक जीये हैं, इसका Data तैयार करना ही चाहिये ताकी पता चले कि Medines

का भ्रमजाल इंसान को कहॉ लाकर पटक रहा है।

एक छोटा सा बीज कितना बड़ा महान वृक्ष का रूप धारण कर लेता है उसे केवल पानी–खाद ही तो दिया जाता है अतः इससे सिद्ध होता है कि हमारे शरीर को भी अत्यन्त सूक्ष्म रूप में कोई उचित पोषक तत्व ही चाहिये, और कुछ नहीं।

निम्नलिखित बिन्दुओं पर, दिये गये Manual में, विस्तार से चर्चा की गई हैं। कृप्या अवश्य पढ़ें, जिससे इस कारगर खुराक का महत्व तथा आवश्यकता बड़े ही विचित्र तथा विलक्षण तरीके से आत्मसात, अंगीकार, तथा अभिभूत की जा सकें।

1) हमारा शरीर केवल प्राकृतिक रसायनों–तत्वों से बना हैं।
2) शरीर के पालन–पोषण में भी मुख्यतः उक्त रसायनों आदि की ही आवश्यकता रहती है
3) कुदरत ने भी इन सभी चीज़ो को प्रचूर मात्रा में उपलब्ध कराया हुआ है।
4) दूसरी तरफ संसार में कृत्रिम रसायनो का भी उपयोग आरम्भ हुआ हैं।
5) यह कृत्रिम रसायन (Synthatic chemicals) इंसान के जीवन के हर पहलू, क्षेत्र में इतना ज्यादा फैल चुके हैं कि इनके मकड़ जाल से निकलना अब असम्भव हैं, जिसे हमने सम्भव करने का प्रयास किया है।
6) चूँकी बीमारी आती है घोड़े की दौड़ और जाती है जूँ की तोर (रफ्तार) अतः जब कोई बीमारी आती है तो पोषक वैक्टीरिया घटने लगते हैं और कुपोषक वैक्टीरिया की मात्रा बढ़ने लगती है तो हम बीमार हो जाया करते हैं।
7) डाक्टर जब दवाई देता है तो रोग तुर्त – फुर्त तरीके से शान्त होता महसूस होता है जिसका प्रभाव क्षणिक रहता हैं परन्तु असली नुकसान यहीं से शुरू हो जाता है। यदि इसी स्टेज पर हमारे प्राकृतिक पोषक तत्वों का सेवन भी आरम्भ कर दिया जाये तो नित्यप्रति आने वाले रोग शरीर में जड़ नहीं पकड़ पायेगें। और यदि आपने हमारे विशुद्ध प्राकृतिक पोषक तत्वों की थोड़ी सी मात्रा का सेवन सदा के लिये चालू रखा तो सारा जीवन निरोग भी रह सकते हैं यह निश्चित है इसमें कोई संदेह ही नही है। अतः अपनी पूर्ण आयु को अवश्य ही प्राप्त करेंगे।
8) यह कृत्रिम रसायन जब शरीर में जाते है तो वही होता है जब गर्म तेल या घी में पानी डाला जाये तो होता है जिसे प्रत्येक इंसान जानता है। और बर्तन में तब तक घर्षण की आवाज़ आती रहती है जब तक कोई एक चीज़ या तो पानी या घी पूरी तरह खत्म न हो जाये।

इस धरती पर सभी देशों की सरकारें बहुत ही विकट, विघटनकारी, विनाशकारी परिस्थितियों को भांपते हुये पूर्ण तत्परता से, परिस्थितियों को और खराब होने देने से रोकने पर उसी तरह से काम कर रही हैं जिस तरह से एक डाक्टर असाधारण मरीज़ को सीधा मनुष्य निर्मित यंत्रों–उपकरणों से सुसज्जित शय्या पर लिटा देता है।

डाक्टर Synthatic Chemicals से निर्मित उच्चकोटी की दवाओं के क्षणिक प्रभाव का लाभ उठाते हुये मनुष्य को हुई बीमारी के आक्रमणो को शान्त तो कर देता है परन्तु साथ ही साथ

10 बीमारियों की उपस्थिति का और बता देता है। इंसान थोड़ा चलने फिरने लायक होकर घर तो चला जाता है परन्तु दवाईयों के जाल में इस कदर फंसता जाता है जैसे किसी दल दल में फंस रहा हो, परिणाम यह होता है कि मरीज़ को जीवन जीना दूभर लगने लगता है, और दवाईओं की गर्मी दिमाग में चढ़नी शुरू हो जाती है, एसी स्थिति में भी हमारा यह चमत्कारिक मिश्रण बहुत कमाल दिखा सकता है।

अतः साधारण अथवा असाधारण मरीज़ अथवा स्वस्थ व्यक्ति को निम्न प्रकार से अलग अलग श्रेणियों में रखा जा सकता है

1) स्वस्थ,
2) पूर्ण स्वस्थ
3) शुरूआती बीमार
4) मौसमी बीमार
5) बीमारी से त्रस्त
6) ला–ईलाज बीमारी
7) Biological Hearting (Normal, Severe)

हमारा Product लेने से बच्चों की Immunity तथा हृष्टता–पुष्टता काफी बढ़ जाती है जो कई वर्षो तक काम देती है यदि अपनी तरफ से कोई गलती न हो अतः बड़े होने पर उक्त परिस्थितियों में रहन–सहन करने पर यदि कोई बीमारी आक्रमण कर भी दे तो परेशानी का सामना नहीं करना पड़ता अतः मरीज़ जल्दी ठीक हो जाता है।

Immunity के ठीक रहने से रोगों की Frquency, Valume and Severity कम रहती है, वशर्ते इंसान शरीर को इस्तेमाल करने की समझदारी दिखाये। अब यदि उसका Immune system जो कुदरत ने दिया था जिसका न तो उसके माता–पिता ने ख्याल रखा न ही उसने स्वयं तो उसे जीवन भर शारीरिक परेशानियों तथा विभिन्न नुकसनों को झेलना ही पड़ता है। अतः हमारे इस विचित्र तथा कारगर प्रोडक्ट को नित्यप्रति खाने से भिन्न भिन्न परिस्थितिओं में भी बहुत ही लाभ होगा।

धन्यवाद,